P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गढ़वाल हिमालय में परम्परागत चिकित्सा पद्धति : जनपद टिहरी गढ़वाल के सन्दर्भ में

के.के. बंगवाल
अतिथि व्याख्याता,
मानव विज्ञान विभाग,
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,
एस0आर0टी0 परिसर,
बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र उत्तराखण्ड प्रदेश के गढ़वाल हिमालय की परम्परागत चिकित्सा पद्धति जनपद टिहरी गढ़वाल के संदर्भ में है। इसके अंतर्गत बीमारी से संबंधित लोक विश्वास, बीमारी के विभिन्न कारण एवं उपचार सम्बन्धित सामाजिक–सांस्कृतिक क्रियाकलापों का अध्ययन किया गया है। बीमारी के कारणों जैसे प्राकृतिक, आलौकिक एवं मानवीय कारकों को समझने तथा देवी–देवताओं, भूत–प्रेत आदि आलौकिक शक्तियों के प्रति लोक विश्वास को वर्णित किया गया है। आलौकिक कारण से अस्वस्थ होने पर उपचार में तंत्र–मंत्र व देवी–देवताओ आदि तथा प्राकृतिक कारण से बीमार होने पर जड़ी–बूटी आदि का सहारा लिया जाता है। परम्परागत उपचारकर्ता के अलावा वर्तमान चिकित्सकों की अहम भूमिका देखी गयी तथा शिक्षा के विकास के साथ परम्परागत चिकित्सा प्रणाली में परिवर्तन तो आया है फिर लोग अपने सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में परम्परागत उपचार को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपनाये हुए हैं।

मुख्य शब्द : परम्परागत चिकित्सा, बीमारी, उपचार, प्राकृतिक, आलौकिक, मानवीय, कारक, जड़ी–बूटी, भूत–प्रेत।

प्रस्तावना

स्वस्थ जीवन यापन करने के लिए मानव विभिन्न प्रकार के उपाय समय दर समय करता रहता है। बीमार होने पर उन सभी चिकित्सा प्रणालियों को उपयोग में लाया जाता है जो स्वस्थ कर सके। इनमें से परम्परागत चिकित्सा प्रणाली भी एक ऐसी पद्धति है जिसमें सांस्कृतिक दृष्टिकोण समाहित है। लोक विश्वास, अभ्यास आदि सांस्कृतिक कियाकलाप इसके अंग के रूप में कार्य करते हैं। गढ़वाल हिमालय में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं आज भी बनी हुई हैं। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य सुविधाओं में विकास तो हुआ है किन्तु उनमें तकनीकि सुविधा, विशेषज्ञों एव कर्मचारियों आदि चिकित्सा सुविधाओं में कमी देखने को मिलती है। इस लिए लोग वर्तमान चिकित्सा के उपयोग के साथ–साथ परम्परागत चिकित्सा को भी अपनाते हैं। परम्परागत चिकित्सा के प्रति लोगों का अटूट विश्वास भी देखने को मिलता है, कतिपय मामलों में बीमारी के इलाज के लिए परम्परागत चिकित्सा को सर्वप्रथम अपनाया जाता है। परम्परागत चिकित्सा का सम्बन्ध सांस्कृतिक तंत्र से जुड़ा होता है और लोग सांस्कृतिक स्वरूप के अनुसार बीमारी के कारण, उपचार का तरीका, उपचारकर्ताओं की भूमिका आदि को अपनाये हुए हैं।

साहित्यावलोकन

गढ़वाल हिमालय के जनपद टिहरी गढ़वाल में परम्परागत चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत जड़ी–बूटी, बीमारी से सम्बन्धित लोक अवधारणा, तंत्र–मंत्र, लोक विश्वास, खान–पान, उपचारकर्ता के उपचार का प्रकार एवं तरीका आदि सम्मिलित है। लोगों का परम्परागत चिकित्सा के प्रति विश्वास है कि यह विषैले गुण से मुक्त है। इस चिकित्सा में बीमारी के कारण के आधार पर उपचार किया जाता है। क्लीमेंट (1932) ने पारंपरिक रुप से बीमारी के तीन कारण–आलौकिक, मानवीय एवं प्राकृतिक कर्मक माने हैं। अकरनेक (1942) ने आदिवासी समाज की चिकित्सा समस्याओं को उजागर किया। फेब्रेगा (1972), फोस्टर एवं एन्डरसन (1978) ने अस्वस्थता व उपचार के सम्बन्ध में विभिन्न पक्षों, मैथ्यूज (1979) एवं माथुर (1982)ने दक्षिण भारत के गांवों में स्वास्थ्य एवं संस्कृति व केरल की जनजातीय चिकित्सा को वर्णित किया है। चौधुरी (1986) ने पश्चिम बंगाल की चिकित्सा में संस्कृति का योगदान, जोशी (1986,88,94) ने हिमालय क्षेत्र

की परम्परागत चिकित्सा व जनजातीय चिकित्सा सम्बन्धी विभिन्न क्रियाकलापों के सन्दर्भ में, भौमिक(1987)ने स्वास्थ्य पर सामाजिक–सांस्कृतिक व वातावरणीय प्रभावों, बनर्जी (1981) ने बीमारी एवं नृजाति चिकित्सा, गोर्ट(1989)ने परम्परागत चिकित्सा में परिवर्तन, वासु(1990) ने बस्तर की जनजातियों के स्वास्थ्य में सामाजिक पक्ष के साथ आनुवांशिक पक्ष का भी अध्ययन किया है। रिजबी(1991) ने जौनसारी जनजाति की स्वास्थ्य में लोक चिकित्सा सम्बन्धी, बेंजी (1997) जड़ी–बूटी चिकित्सा, रीड(1998) ने रोगी के विभिन्न पक्षों, हेरिस(1998) ने जड़ी–बूटि के द्वारा उपचार करने वालों के उपचार के तरीके आदि को वर्णित किया। उक्त विद्वानों द्वारा किया गया कार्य इस अध्ययन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मार्ग दर्शक रहा।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र गढ़वाल हिमालय में परम्परागत चिकित्सा पद्धतिः जनपद टिहरी गढ़वाल के विशेष सन्दर्भ में है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य परम्परागत चिकित्सा से सम्बन्धित लोक विश्वास, बीमारी के कारण, बीमारी का उपचार एवं उपचारकर्ता की भूमिका आदि को जानना है।

शोध प्रविधि

इस अध्ययन के लिए साक्षात्कार, अवलोकन आदि शोध प्रविधियों को उपयोग में लाया गया है। साक्षात्कार के अन्तर्गत बीमारी के कारण, उपचार, उपचार का तरीका, प्राकृति, आलौकिक, मानवीय कारको की भूमिका इत्यादि तथा उन सभी पहलुओं का अवलोकित किया गया जो किसी न किसी रूप में विषय से सम्बन्ध रखते हैं।

परिणाम एवं चर्चा

गढ़वाल हिमालय के जनपद टिहरी गढ़वाल में परम्परागत चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत जड़ी–बूटी, बीमारी से सम्बन्धित लोक अवधारणा, तंत्र–मंत्र, लोक विश्वास, खान–पान, उपचारकर्ता के उपचार का प्रकार एवं तरीका आदि सम्मिलित है। लोगों का परम्परागत चिकित्सा के प्रति विश्वास है कि यह विषैले गुण से मुक्त है। बीमारी के कारण के आधार पर उपचार किया जाता है। क्लीमेंट (1932) ने बीमारी के तीन कारण–आलौकिक, मानवीय एवं प्राकृतिक कर्मक माने हैं। इसी प्रकार गढ़वाल हिमालय में भी इन तीन कारकों के कारण से बीमारी का होना माना जाता हैं जिनका विवरण निम्नवत है–

प्राकृतिक कारक

प्राकृतिक कारक के कारण वह बीमारियां आती हैं जो प्रकृति में उपलब्ध चीजों व वातावरण के प्रभाव के कारण होती हैं जैसे सूक्ष्मजीव बैक्टीरिया, वायरस, गर्म, ठन्डा, इत्यादि। समस्त बीमारियों के कारण में प्राकृतिक कारक की महत्वपूर्ण भूमिका है तथा इनके उपचार के लिए प्राकृतिक उपचार जैसे जड़ी–बूटी, घरेलू उपचार आदि व वर्तमान में प्रचलित चिकित्सा का सहारा लिया जाता है।

आलौकिक कारक

इसके अन्तर्गत अदृश्य शक्तियों जैसे देवी–देवता, भूत–प्रेत आदि आते हैं जो कि अपने प्रभाव के कारण अस्वस्थता उत्पन्न करते हैं। आलौकिक कारक के अन्तर्गत दो प्रकार की मांगलिक/लाभदायी व अमांगलिक/हानिकारक आलौकिक शक्तियाँ आती हैं जो बीमारी व अस्वस्थता का कारण बनती हैं। देवी–देवताओं को सुख–दुःख के साथी के रूप में माना जाता है। जिनके के प्रति लोगों का श्रद्धा–भाव होता है। इन मांगलिक शक्तियों के प्रकोप या दोष से बीमारी, अस्वस्थता या समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं तो भी इन शक्तियों को श्रद्धा के भाव से देखा जाता है और समय–समय इन्हे श्रद्धा भाव से पूजा जाता है। यह माना जाता है कि मांगलिक शक्तियाँ लाभदायक अधिक एवं हानिकारक कम होती है।

अमांगलिक शक्तियाँ जैसे ऐड़ी–आछरी (परियाँ), भूत–प्रेत आदि के प्रति श्रद्धा का भाव न होकर डर का भाव होता है और इन्हे हानिकारक माना जाता है। अमांगलिक शक्तियों को देवी–देवताओं की अपेक्षा कम पूजा जाता है। भूत–प्रेत की पूजा रात्रि के समय की जाती है। अमांगलिक शक्तियों के प्रतीक स्वरूप स्थान घर के अन्दर नहीं होते हैं जबकि देवी–देवताओं के मंदिर एवं घर के अन्दर पूजा स्थल होते हैं।

विद्यार्थी (1977) के अनुसार जनजातीय लोग चार प्रकार की आत्माओं व देवी–देवताओं पर विश्वास करते हैं। सुरक्षा प्रदान करने वाली आत्माएँ, परोपकारी आत्माएँ, बुरी आत्माएँ एवं पैतृक आत्माएँ जनजातीय समाज में कार्यरत होती हैं। गढ़वाल हिमालय में भी आत्माओं पर विश्वास किया जाता है जिन्हें आलौकिक शक्तियों के अन्तर्गत माना जाता है। मुण्डा समुदाय में पाया कि यदि उनमें कोई व्यक्ति बुरी नजर या जादू–टोने के कारण बीमार होता है तो वह लोग चिकित्सक के पास न जाकर जादूगर के पास इलाज के लिये जाते हैं, क्योंकि उनका विश्वास है कि इन मामलों में चिकित्सक असहाय होता है। बीमारी को नियंत्रित करने के लिए देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना एवं बलि से खुश किया जाता है तो बीमारी स्वतः ही नियंत्रित हो जाती है (चौधुरी1967:3–9)। इस क्षेत्र में भी जादू–टोना, तंत्र–मंत्र, बलि प्रथा आदि पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विश्वास करते हैं।

जनजातियाँ समुदाय में विभिन्न सामाजिक–क्रियाकलाप, देवी–देवताओं और आत्माओं के इर्द–गिर्द घूमते हैं। आलौकिक शक्ति को शक्तिशाली एवं देवी–देवताओं के रुप में पहचाना गया है जो कि समुदाय में अनहोनी या घटनाओं को नियत्रिंत एवं प्रभावित करते हैं (चौधुरी, 1986:3–11) दूबे (1970) ने जनजातीय लोगों के उन अदृश्य शक्तियों में दृढ़ विश्वास के संबंध में अध्ययन किया जो कि एक महामारी को नियत्रिंत करने व एक पीड़ित व्यक्ति के उपचार में सहायक होते हैं। इसी प्रकार का विश्वास गढ़वाल क्षेत्र के लोग में देखने को मिलता है।

आलौकिक शक्तियों के कारण वह सब बीमारियां हो सकती हैं जो कि प्राकृतिक शक्तियों के कारण होती हैं किन्तु इस बारे में बीमारी की प्रथम अवस्था में पहचान करना मुश्किल होता है फिर भी कुछ मामलों में लोग पारम्परिक अनुभव के आधार पर पहचान कर लेते हैं।

देवी–देवता के दोष तथा भूत–प्रेत के प्रभाव से छौल लगने के कारण लोग बीमार होना मानते हैं तथा इसके कारण बीमारी के स्वभाव में परिवर्तन होना माना जाता है। किसी का बार–बार बीमार होना, परिवार के अधिक सदस्यों का एक साथ अस्वस्थ होना, मानसिक विकृत होना, जन एवं पशु हानि होना, उपचार करने पर ठीक न होना इत्यादि आलौकिक शक्तियों के प्रभाव का होना माना जाता है।

मानवीय कारक

जब कोई व्यक्ति किसी के देखने, छूने, बुरी जुबान बोलने आदि के कारण अस्वस्थ होता है तो यह मानवीय कारक के अन्तर्गत आता है। जब कोई व्यक्ति किसी को बुरी नजर या गलत दृष्टि से देखता है और वह बीमार हो जाता तो उसे दाग लगना या नजर लगना कहा जाता है। किसी व्यक्ति के देखने एवं छूने दोनो से नजर लगना माना जाता है। नजर को दूर करने के लिए तंत्र–मंत्र का सहारा लिया जाता है। यदि किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे को गाली या भला–बुरा बोला जाता है और यदि वह अस्वस्थ होता है या उसके साथ कोई घटना घटती है जैसा कि उस व्यक्ति ने कहा है तो उसका कारण बुरी जुबान माना जाता है और इसके उपचार के लिए आलौकिक रूप से उपचार करने वाले जैसा झाड़–फूंक आदि का सहारा लिया जाता है।

देवी–देवताओं का बीमारी एवं उपचार से सम्बन्ध

गढ़वाल हिमालय को देवभूमि के रुप में भी जाना जाता है। यहाँ की नदियाँ, पर्वत, औषधियाँ, पशु–पक्षी आदि सभी का देवत्व से परिपूर्ण माना जाता है, अर्थात् प्रत्येक दृष्टि से इस क्षेत्र में देव–संस्कृति का बाहुल्य है। गढ़वाल हिमालय के परिवेश में यहाँ के जीवन और संस्कृति से देवताओं का घनिष्ठ संबंध माना जाता है, क्योंकि यहाँ के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र एवं क्रियाकलाप से देवता संबंध रखते हैं, कहा जा सकता है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक जो भी संकल्प और विकल्प, सुख–दुःख जीवन मे आते हैं वह देवी–देवताओं विशेष से भी संबंध रखते हैं। यदि किसी परिवार या कुल में एक या अनेक व्यक्ति बीमार होते है तो उनको ठीक करने के लिए चिकित्सक के अलावा देवी–देवताओं की शरण भी ली जाती है। देवी–देवता की शरण में आने से पूर्व उच्चारण (देवता के निमित्त भेंट) भी रखा जाता है। उच्चारण का ताप्पर्य ऐसी भेंट से है जो चावल, रुपये–पैसे आदि के रुप में रखी जाती है। उच्चारण रखते समय मन में जो संकल्प किया जाता है, वह मनोकामना पूर्ण होने पर पूरा किया जाता है। उच्चारण करते समय कामना करने वाला व्यक्ति मन में यह संकल्प करता है कि यदि हम/मैं दुःख बीमारी आदि संकट से मुक्त हो गया तो हम/मैं छत्तर, घाण्ड, पशु–बलि आदि में से किसी एक चीज को भेंट के साथ–साथ पूजा भी करेंगे/करुंगा। देवी–देवता को लोग धन देने वाला, अन्नदाता, पुत्रदाता, बीमारी एवं भूत–प्रेत को भगाने वाला एवं रक्षक आदि के रुप में माना जाता है। यह एक अदृश्य शक्ति है जो कि मनुष्य की इच्छा को पूर्ण करने में मद्द करती है। यहां के लोग दैविक शक्ति पर अत्यधिक विश्वास करते है एवं किसी व्यक्ति के बीमार पड़ने पर या संकट आने पर देवी–देवता का स्मरण करते हुए स्वस्थ जीवन यापन की प्रार्थना करते हैं।

जब कोई व्यक्ति बीमार होता है या संकट में होता है तो परिवार का सदस्य देवता के पास अग्याल (कुछ चावल) लेकर जाते है। देवता जूंदाल (चावल के दाने) अपने हाथ में लेकर भूत, भविष्य, वर्तमान में घटित होने वाली घटनाओं, बीमारी हटाने, भूत–प्रेत भगाने आदि के उपायों से अवगत कराते है। साथ ही साथ भूत–प्रेत को स्वयं भी भगाता है। लोग मनोकामना पूर्ण होने पर देवी–देवताओं को धागुला (चांदी का मोटा कड़ा) छतर चांदी की शुंक आकार की वस्तु कांस्य या पीतल की बड़ी घंटी आदि देवता के निर्मित भेंट करते हैं। जनजातियाँ समुदाय में विभिन्न सामाजिक–क्रियाकलाप, देवी–देवताओं और आत्माओं के इर्द–गिर्द घूमते हैं। आलौकिक शक्ति को शक्तिशाली एवं देवी–देवताओं के रुप में पहचाना गया है जो कि समुदाय में अनहोनी या घटनाओं को नियत्रिंत एवं प्रभावित करते हैं (चौधुरी, 1986:3–11)। गढ़वाल के लोग मुख्य रुप से नागराजा, नृसिंह, दुर्गा, काली, घण्टाकर्ण आदि स्थानीय देवी–देवताओं जो विभिन्न नामों से जाने जाते हैं की पूजा–अर्चना करते हैं एवं इन पर अटूट विश्वास रखते हैं। इस प्रकार देवी–देवता के दोष के कारण लोग अस्वस्थ होते है और इसका कारण एवं उपचार के बारे में जानने के लिए देवी–देवता की शरण में जाते हैं।

दोष

देवी–देवता एवं पित्रों के नाराज होने से जो समस्या होती है उसे दोष कहा जाता है। गढ़वाल हिमालय में देवी–देवता के दोष एवं पित्र दोष के कारण बीमारी का होना माना जाता है। यह माना जाता है कि जब देवी–देवता से मनोकामना पूर्ण होने के लिए कोई संकल्प लिया हो और मनोकामना पूर्ण होने पर उसे पूरा न किया हो, तो देवी–देवता के नाराज होने से कुटुम्ब या परिवार के व्यक्ति दोष के कारण बीमार हो जाते हैं, तथा कभी–कभी मानसिक विकृति आदि भी हो जाती है। दोष के कारण कोई भी व्यक्ति किसी भी बीमारी से पीड़ित हो सकता है। बीमारी उपचार करने पर ठीक न होना, अचानक बीमारी होना एवं स्वयं ठीक होना, एवं कभी पागलों जैसी हरकत करना इत्यादि लक्षण दोष माने जाते हैं। उक्त लक्षणों के आधार पर लोग वाक्या (भूत, वर्तमान एवं भविष्य के बारे में अवगत कराने वाला देवी–देवता) के पास अग्यांल (कुछ चावल एवं पैस के रूप में भेंट) लेकर जाते हैं और वाक्या चावलों को देखकर बीमारी के कारण से अवगत करा कर उपचार हेतु समाधान बताता है। यह माना जाता है कि यदि बताये गये उपचार को किया जाता है तो समस्या एवं बीमारी में कुछ न कुछ आराम मिलता है।

कुछ विशेष बीमारियाँ जैसे चेचक, दादरु (खसरा) आदि देवी के प्रकोप से होना मानी जाती हैं। यह बीमारियां जीवनकाल में एक बार अवश्य होती है और यह अक्सर बच्चों में होती हैं। कुछ लोग इस बीमारी को शीतला देवी का प्रकोप मानते हैं और बीमारी के प्रकोप या दोष से छुटकारा पाने के लिये देवी की पूजा की जाती है। इस प्रकार इस क्षेत्र में देवता दुखः कारक एवं

सुखकारक के रूप में देखे जा सकते हैं। बीमारी के उपचार में वर्तमान में प्रचलित चिकित्सा के अलावा परम्परागत चिकित्सा पद्धति को उपयोग में लाया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में परम्परागत चिकित्सा मे देवी–देवता चिकित्सक के रूप में भी कार्य करते हैं।

भूत–प्रेत का बीमारी से सम्बन्ध

लोगों का विश्वास है कि भूत–प्रेत गाड–गधेरों, धार(ऊँचाई वाले स्थान), श्मशान घाट, मरे को दफनाने वाले स्थानों, दुर्घटना वाले स्थानो आदि पर वास करते हैं। जो अल्प आयु मे मृत्यु प्राप्त करता है या मृत्यु से पूर्व मन में कोई लालसा रही हो तो ऐसे भूत–प्रेत योनि धारण करते हैं। रात्रि में पेड़ों के हिलने–डुलने जैसी आवाज सुनाई देना, पत्थरों के गिरने के साथ अजीब–सी आवाज सुनाई देना, काले या सफेद रंग की छाया दिखाई देना, कभी कुत्ता या बिल्ली देखना एवं गायब हो जाना, इत्यादि घटनाओं के होने पर भूत–प्रेत का प्रकोप माना जाता है। जिसके प्रभाव के कारण लोग बीमार होता है।

एड़ी–आछरी

लोगों में यह धारणा है कि आछरियाँ अधिकांशतः ऊँचाई वाले स्थानों में निवास करती है तथा यह एक स्थान पर दूसरे स्थान पर उड़कर जाती है अर्थात डांडा–कांठों (पर्वत श्रृंखलाओं) में निवास करती हैं। किन्तु आछरियों के संबंध में यह भी धारणा है कि यह एक ही परिवार की नौ बहनें थीं इनकी मृत्यु बचपन में जंगल में हुई थी, जिन्होंने आछरियों (पारियों) का रुप धारणा किया। माना जाता है कि यह यह देखने में अति सुन्दर होती है रंग–बिरंगे चटकीले–भड़कीले कपड़े जैसे लाल, पीले, हरे, सुनहरे आदि रंगों के कपड़े धारणा करती हैं तथा यह एक चोटी से दूरी चोटी तक उड़कर जाती है। जो लोग जंगलों में गीत गाते हैं एवं चोटियों पर लाल, पीले, हरे, सुनहरे आदि चटकीले–भड़कीले कपड़े पहनकर जाते हैं, उन पर आछरियाँ अपना प्रकोप दिखाती है जिससे वह अस्वस्थ हो जाते हैं। आछरियों का प्रभाव ग्वाला, जंगल व चोटियों पर घास व लकड़ी काटने वाले पर अक्सर होता है।

स्पप्न में रंग–बिरंगे व चटकीले–भड़कीले कपड़े धारणा करना, पानी में तैरना, पर्वत व चट्टानों को देखना, लड़की के पंख लगे होना व उड़ते हुए देखना आदि लक्षणों में से कोई भी लक्षण बार–बार दिखाई देने पर आछरियों का प्रकोप माना जाता है। साथ ही बार–बार बेहोश होना, बुखार मे तापमान घटना–बढ़ना, भूख कम लगना, नींद में बड़बड़ाना, मानसिक स्थिति में बदलाव आना आदि लक्षण भी एड़ी–आछरी के छौल(प्रभाव) की पुष्टि करने में सहाय होते हैं। लक्षणों के होने पर पुष्टि के लिए वाक्या(भूत,भविष्य व वर्तमान के बारे अवगत कराने वाला देवता) के पास जाते है और वाक्या द्वारा आछरियों के प्रकोप की पुष्टि होने पर है झाड़कण्डी (झाड़–फूँक करने वाला) से पूजा करवायी जाती है।

छौल

व्यक्ति भूत–प्रेत प्रभाव से अस्वस्थ हो जाता है तो उसे छौल लगना कहा जाता है। कभी–कभी व्यक्ति अचेतन अवस्था में प्रवेश कर जाता है, जिससे उसे या उसके परिवार को विभिन्न प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। यह भी माना जाता है कि भूत–प्रेत का मनुष्य योनि पर अपना प्रभाव एक विशेष प्रकार की हवा या छाया द्वारा होता है जिसे छौल कहा जाता है। छौल के बारे मे पारम्परिक अनुभव के द्वार अनुमान लगाया जाता है और पुष्टि के लिए वाक्या के पास जाते है। इसका उपचार रौखाली तथा झाड़कण्डी के छौल पूजा करके किया जाता है।

बीमारियों का पारम्परिक उपचार

लोग बीमारी के उपचार के लिये विभिन्न प्रकार के आलौकिक एवं लौकिक उपचार की सहायता लेते हैं।यदि एक प्रकार की चिकित्सा प्रणाली से उपचार संपन्न नहीं हो पाता तो दूसरी चिकित्सा प्रणाली की सहायता ली जाती है। यहाँ पर जड़ी–बूटी, तंत्र–मंत्र, घरेलू उपचार आदि परंपरागत उपचार तथा वर्तमान में प्रचलित चिकित्सा प्रणालियों की सहायता समय–समय पर ली जाती है। उपचार के लिये विभिन्न प्रकार के परंपरागत उपचारकर्ताओं जैसे – मंत्रोई(तंत्र–मंत्र से उपचार करने वाला), वैद्य(जड़ी–बूटी का जनकार), झाड़गण्डी(झाड़ फूंक करने वाला), ब्राह्मण, दाइ(घरेलू नर्स), वाक्या(भूत, वर्तमान एवं भविष्य के बारे में अवगत कराने वाला देवी–देवता) आदि की सेवाएँ समय–समय पर ली जाती हैं।

मंत्रोपचार

मंत्र से उपाचार करने वाले को मंत्रोई या भेदवाला कहा जाता है। तेल पर मंत्र करके उपचार करने वाले को तेलवाला के नाम से जाना जाता है। यह उपचारकर्ता सरसों के तेल पर मंत्र करके पीलिया, कटे, जले आदि का इलाज करता है। कुछ उपचारकर्ता किसी एक या एक से अधिक बीमारी के विशेषज्ञ होते हैं। इस क्षेत्र में भेदवाल जोंकू, दांत दर्द, मकड़ा, फोड़ा–फुंसी आदि प्राकृतिक बीमारियों का इलाज मंत्रोपचार के माध्यम से करते हैं। बुरी नजर का उपचार मंत्रोपचार से किया जाता है। नजर लगने के कारण जा बच्चे खाना नहीं खाते हैं उनके लिए गुड़ या चीन मंत्र करके खलाया जाता है। नजर न लगने के लिए काला धागा पहनने को दिया जाता है।

झाड़कण्डी

आलौकिक शक्तियों के प्रभाव को दूर करने के लिये झाड़कण्डी अर्थात् झाड़–फूँक वाले सहायता ली जाती है। झाड़–फूँक के द्वारा छौल पूजा, ऐड़ी–आछरी पूजा आदि किया जाता है।

पंडित

जन्मपत्री में उपस्थित ग्रह दशा आधार पर हानिकारक ग्रह के उपचार का तरीका भी बताता है। पंडित पाठ–पूजा के साथ उपवास, दान आदि के बारे में भी अवगत कराता है। यह एक उपचारकर्ता एवं परामर्शदाता के रूप मे कार्य करता है।

दाई

दाई का कार्य बच्चे को जन्म दिलाने मे नर्स की भांति सहायता करना है। यह पारम्परिक अनुभव के आधार व अभ्यास के आधर पर शिक्षा प्राप्त करती है। दाई नवजात शिशु को नहलाने एवं शिशु का नाल काटने का कार्य भी स्वयं करती है। शिशु एवं मां के खान–पान व

देखभाल के संबंध में भी अवगत कराती है। कमर दर्द, नस पड़ना आदि का मालिस द्वार उपचार भी करती है। गढ़वाल में दाई एक परामर्शदाता व नर्स की भूमिका अदा करती है।

जड़ी–बूटी

कुछ लोग जड़ी–बूटी का ज्ञान घरेलू स्तर पर भी रखते हैं कुछ बीमारियों का उपचार स्वयं ही करते हैं किन्तु अधिकांश बीमारियों का उपचार जड़ीवाला (जड़ी–बूटी का ज्ञान रखने वाला) अर्थात् जड़ी–बूटी विशेषज्ञ से भी करवाया जाता है। बुखार, सिर दर्द, पेट दर्द, फोड़ा–फुंसी, आँख दर्द, मकड़ा, फूला, जोंकू, दांत दर्द, कान दर्द आदि के उपचार में जड़ी–बूटी के विशेषज्ञों का सहारा लिया जाता है। कुछ उपचारकर्ता उपचार करने का मानदेय लेते हैं उनकी आर्थिकी इस व्यवसाय पर निर्भर रहती है। किन्तु वर्तमान में जड़ी–बूटी उपचारकर्ताओं की कमी देखने को मिलती है और लोगों का रूझान भी इस ओर कम हो रहा है।

निष्कर्ष

गढ़वाल हिमालय की परम्परागत चिकित्सा प्रणाली में लोक विश्वास एवं अभ्यास का समावेश देखने को मिलता है। साथ ही इसमे सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश समाहित है और जिसका सम्बन्ध स्वास्थ्य रक्षा में घनिष्ठता दर्शाता है। इस क्षेत्र में लोग प्राकृतिक, आलौकिक एवं मानवीय कारको के कारण बीमारी का होना मानते हैं। देवी–देवताओं के दोष, भूत–प्रेत के प्रभाव कारण भी बीमार होना माना जाता है। मांगलिक एवं अमांगलिक आलौकिक शक्तियों को श्रद्धा एव डर के भाव मे देखा जाता है जो कि अस्वस्थता के लिये भी जिम्मेदार हैं। देवी–देवता में श्रद्धा का भाव होने से इसे रक्षक, परामर्शदाता, चिकित्सक, आदि के रुप में देखा जा सकता है। भूत–प्रेत, एड़ी–आछरी (परियाँ) आदि को डर के भाव से देखा जाता है जो कि हानिकारक होते हैं।

बीमारी की पहचान एवं कारण को पारंपरिक अनुभव एवं अभ्यास के आधार पर पहचाना जाता है। इस प्रकार इन जनजाति के लोक–विश्वास, बीमारी के कारण, उपचार का तरीका इस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरुप भी देखे जा सकते हैं। गढ़वाल हिमालय के लोगों के शैक्षिक स्तर बढ़ने के साथ खान–पान, रहन–सहन, आस्था–विश्वास, चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता आदि में परिवर्तन आया है जिसके कारण परम्परागत चिकित्सा प्रणाली में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। परम्परागत चिकित्सा के प्रति रूझान कम हुआ है फिर भी लोग परम्परागत चिकित्सा प्रणाली को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपनाते हैं।

सुझाव

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह सुझाव दिया जा सकता है कि पारम्पररिक उपचारकर्ता विशेषरूप से जो जड़ी–बूटी से उपचार करने वाले एवं किसी विशेष चीज से विशेष बीमारी का उपचार करने वाले उपचारकर्ताओं के ज्ञान को प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा निरीक्षण करके प्रशिक्षित किया जाना चाहिए तथा इनको स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में आर्थिक रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथसूची

अकरनेक, ई0एच0 (1942) : प्रिंमिटिव मेडिसिन एंड कल्चर पैटर्न, बुलेटिन ऑफ द हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन (12) 545–574।

क्लेमेंट, एफ0ई0 (1932) : प्रिंमिटिव कॉनसेप्टस ऑफ द डिजीज, अमेरिकन आर्कियोलोजी एंड इथनोलोजी (32)

चौधुरी, बुद्धदेव (1967) : मैजिक वरसेस मेडिसिन इन ट्राइबल विले ज, आदिवासी : ix– 39।

चौधुरी, बुद्धदेव (1986) : मेडिकल एन्थ्रोपोलोजी इन इंडिया विद स्पेशियल रिफरेंस टु ट्राइबल पॉपुलेशन्स, एडिट इन ट्राइबल हेल्थ : सोसियो–कल्लरल डाइमेंसन, इन्टर इंडिया पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, 3–11।

जोशी, पी.सी..(1986) हेल्थ एण्ड हीलिंग इन हिमालय,जर्नल आफ हिमालयन स्टडीज एण्ड डेवलपमेंट10:11–117।

जोशी, पी.सी..(1988) ट्रेडिशनल मेडिकल सिस्टम इन सेन्ट्रल हिमालया, द ईस्टर्न एन्थ्रोपोलोजिस्ट(1):78–86।

जोशी, पी.सी..(1994) ट्राइबल मेडिसिन इन इण्डियन कन्टेक्स्ट, वन्यजाति 42:1–8।

दुबे, एस0सी0 (1970) : मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

फेब्रेगा जे0एच0 (1972) : मेडिकल एन्थ्रोपोलोजी, बाइनियल रिव्यू ऑफ एन्थ्रोपोलोजी, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 167–229।

फॉस्टर,जी.एम.एण्ड बी.जी.एण्डरसन (1978) मेडिकल एन्थ्रोपोलोजी, जॉन विलि, न्यूयार्क।

बनर्जी, बी.जी. एण्ड आर. जलोटा(1988) फोल्क इलनेस एण्ड इथनोमेडिसन, नार्थन बुक सेन्टर, नई दिल्ली।

बेन्जी,जी.(1997) हर्बल मेडिसिन इन यूरोपियन रेगुलेशन,प्लीमेको. रिस. 35(5):335–362।

बंगवाल, के0के0 (2000) : ब्लीफ, प्रौक्टिसेज एण्ड चेजिंग ट्रेंडस इन द ट्रेडिशनल मेडिकल सिस्टम ऑफ भोटियाज ऑफ चमोली गढ़वाल, (शोध ग्रंथ) मानव विज्ञान विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

भौमिक, पी.के.एण्ड टी.बागची (1987) सोसियो कल्चरल एण्ड इनवारमेंटल फैक्टरस ऑफ हेल्थ, किरटाडस– कोजिकोड, केरला।

मनकाजना, इ.एम.(1979) ए केस फार ट्रेडिशनल हीलर्स इन साउथ अफ्रीका, साउथ अफ्रीका मेडिकल जर्नल 56(023):1003–07।

माथुर,पी.आर.जी.(1982) एन्थ्रोपोलोजी आफ हर्बल मेडिसिनः डिजीज एण्ड क्योरिंग टेक्निक एमंग द ट्राइब्स आफ नार्थ वाइनाड केरल, मैन इन इण्डिया 62(3)।

मैथ्यूज,सी.एम.इ.(1979) हेल्थ एण्ड कल्चर इन साउथ इण्डियन विलेज, स्टर. पब्लि., नई दिल्ली।

रीड,ए.(1998) अन्डरस्टेन्डिग अवर पेसेन्टसः एन एन्थ्रोपोलोजिकल एप्रोच, आस.फाम.फिजिसियन 27(2)99–102।

रिजबी, एस.एन.ए (1991) मेडिकल एन्थ्रोपोलोजी आफ जौनसारी, नार्थन बुक सेन्टर, नई दिल्ली।

विद्यार्थी, एल0पी0 (1977) : ट्राइवल कल्चन इन इण्डिया, कॉनसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।

वासु, एस.(1990) जेनेटिक एण्ड सोसियो कल्चरल डाइमेंसन्स आफ ट्राइबल हेल्थः बस्तर ट्राइबल ग्रुप, एडिट इन कल्चरल एण्ड इनवाइरमेंटल डाइमेंसन आन हेल्थ, बी.चौधुरी, इन्टर इन्डिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

हसन, के.ए.(1967) द कल्चरल फ्रांटियरस आफ हेल्थ इन विपेज इन्डिया, मनकटल्स प्रकाशन, बाम्बे।

हेन्स, जे.एस.(1998) हर्बल हीलर्स, जर्नल आफ ओकला स्टेट मेडिकल एसोसियेसन 91(7)–410